Toppersnotes
Unleash the topper in you

PGT

भूगोल

EMRS/KVS/NVS/DSSSB

स्नातकोत्तर शिक्षक

भाग – 3

अधिवास, जनसंख्या, मानव, आर्थिक, परिवहन एवं प्रायोगिक भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
अधिवास, जनसंख्या, मानव, आर्थिक, परिवहन एवं प्रायोगिक भूगोल		
1.	ग्राम्य आकारिकी	**1**
2.	ग्रामीण अधिवासों के प्रकार	**4**
3.	नगरों की उत्पत्ति एवं विकास	**9**
4.	नगरीय आकारिकी	**20**
5.	विश्व में जनसंख्या वृद्धि	**25**
6.	जनसंख्या पिरामिड	**42**
7.	मानव भूगोल	**44**
8.	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ	**52**
9.	प्रवास	**56**
10.	मानव विकास संकल्पना	**66**
11.	संसाधनों का वर्गीकरण – 1	**69**
12.	संसाधनों का वर्गीकरण – 2	**73**
13.	मृदा संसाधन	**75**
14.	जल संसाधन	**86**
15.	खनिज संसाधन	**91**
16.	ऊर्जा संसाधन	**100**
17.	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ (मानव व्यवसाय)	**108**
18.	विश्व के प्रमुख परिवहन मार्ग	**117**
19.	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं व्यापारिक संगठन	**132**
20.	भौगोलिक मानचित्र	**138**
21.	मानचित्र प्रक्षेप	**145**

1
CHAPTER

ग्राम्य आकारिकी

ग्राम्य आकारिकी Rural Morphology

- ग्रामीण अधिवासों की महत्वपूर्ण विशेषता उनकी आकारिकी होती है। अधिवास भूगोल में आकारिकी का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
- आकारिकी शब्द (Monphology) का अर्थ है आकारों (forms) के विषय में वार्तालाप करना।
- अधिवास भूगोल में आकारिकी का अर्थ-गाँव की आन्तरिक संरचना व बाह्य संरचना से है। ग्राम्य आकारिकी को तीन भागों में बांटा जा सकता है।
  1. भौतिकी आकारिकी (physical Morphology)
  2. कार्यात्मक आकारिकी (Functional Morphology)
  3. जनाकिकीय या सामाजिक आकारिकी (Demographic or social Morphology)

भौतिक आकारिकी

- ग्राम्य आकारिकी का सामान्य अर्थ इसके भौगोलिक आकारिकी से ही लगाया जाता है।
- भौतिक आकारिकी का अर्थ गाँवों की ठोस संरचना (बनावट) से है।
- भौतिक आकारिकी के संगठन तत्व-मार्ग, गलियां, सड़के, आवास पार्क आदि।
- ग्रामों की इस आकृति (बनावट) को ही ग्राम प्रतिरूप कहते हैं।
- आकृति के आधार पर गाँवों की आकारिकी को कई भागों में बाँटा जा सकता है।

1. आयताकार या वर्गाकार प्रतिरूप (Rectangular and square pattern):

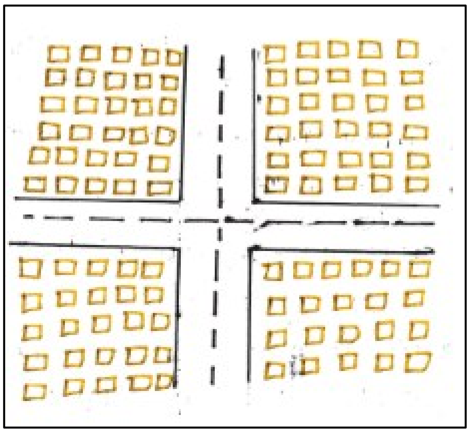

- ऐसे प्रतिरूपों का विकास समतल मैदानी भागों में होता है।
- इन प्रतिरूपों में सड़कें समकोण पर काटती हैं।
- इस प्रकार के अधिवास उत्तरी भारत, पूर्वी चीन, रूस के मैदानी भागों में देखे जा सकते हैं।

2. रेखीय प्रतिरूप (Linear pattern)

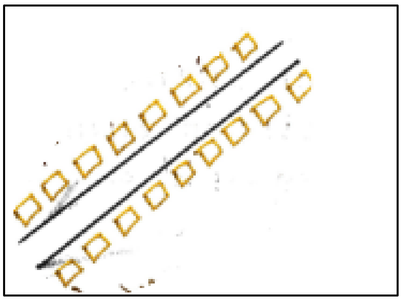

- ऐसे प्रतिरूप का विकास रेलवे लाइन, नेशनल हाइवे के सहारे-सहारे होता है। कभी-कभी इन अधिवासों का निर्माण नदियों के किनारों पर भी हो जाता है।
- ऐसे प्रतिरूप इंग्लैंड के हैम्पशायर, फ्रांस के लारेन प्रदेश, उड़ीसा के समुद्र तट, गुजरात के सौराष्ट्र, दक्षिण भारत में देखने को मिलते हैं।
- इसके अलावा ब्रह्मपुत्र, हांग्हो आदि नदियों के तटबंधों पर भी ऐसे अधिवास देखे जा सकते हैं।
- यूरोप में ऐसी बस्तियों को गली ग्राम कहा जाता है।
- इन प्रतिरूपों को पट्टी प्रतिरूप और डोरी प्रतिरूप भी कहा जाता है।

3. **शतरंजी प्रतिरूप (Chess Board Pattern):**

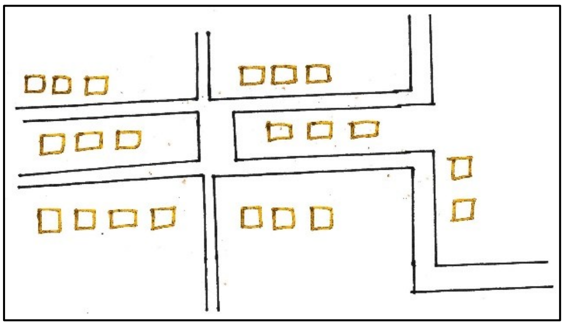

- इसे चौकोर पट्टी प्रतिरूप भी कहा जाता है।
- ऐसे प्रतिरूप समतल मैदानी भागों में देखने को मिलते हैं।
- ये आयताकार या वर्गाकार प्रतिरूप की तरह ही होते हैं, अंतर केवल इतना होता है कि ये नियोजित ढ़ंग से बसाए जाते हैं।

4. **वृत्ताकार या अण्डाकार प्रतिरूप:**

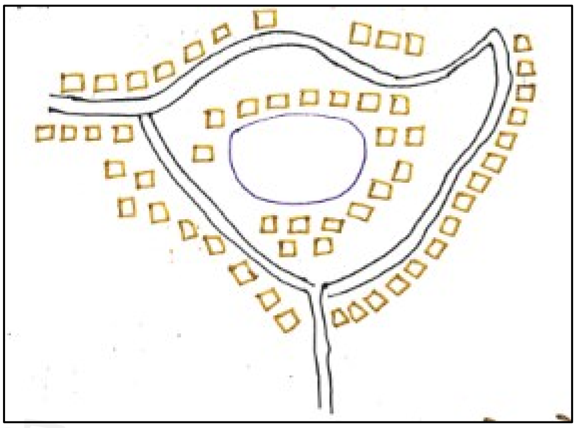

- ऐसे अधिवास प्रतिरूपों का निर्माण किसी झील के चारों ओर, ग्रामीण मंदिर के चारों ओर, तालाब के चारों ओर होता है।
- जब किसी सार्वजनिक भूमि, जमींदार या मुखिया के भवन-धार्मिक भवन आदि के चारों ओर बस्ती का निर्माण होता है तो उसे नाभिकीय ग्राम कहा जाता है।
- जब किसी जलाशय के चारों ओर घर बनाए जाते हैं तब बस्ती की आकृति निहारिका के समान हो जाती है, इसे निहारिकीय ग्राम कहा जाता है।

5. **अर्द्ध वृत्ताकार प्रतिरूप (Semi Circular Pattern)**

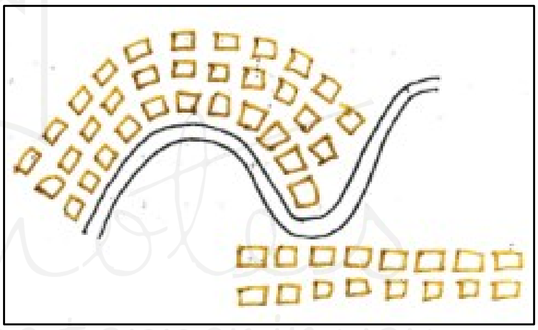

- इन अधिवासों का निर्माण नदी विसर्प, गोखुर झील, वृत्ताकार जलाशय के एक ओर होता है।

6. **त्रिभुजाकार प्रतिरूप (Triangular Pattern)**

- ऐसे अधिवास प्रतिरूपों का निर्माण किसी स्थलीय या जलीय बाधा के कारण सड़क के एक ही ओर ग्रामीण बस्ती का विस्तार होता है, तथा उस सड़क में मिलने वाली लंबवत सड़क के किनारे भी गृह बन जाते हैं।

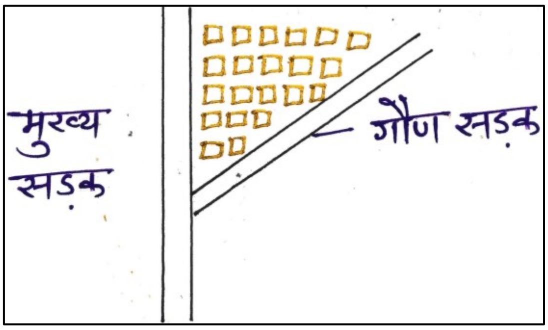

7. **सीढ़ी आकार के प्रतिरूप:**

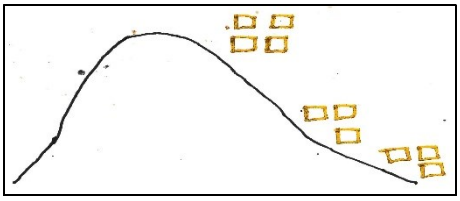

- ऐसे अधिवास प्रतिरूपों का निर्माण पहाड़ी ढ़ालों पर होता है

8. **अरीय प्रतिरूप (Radial Pattern)**

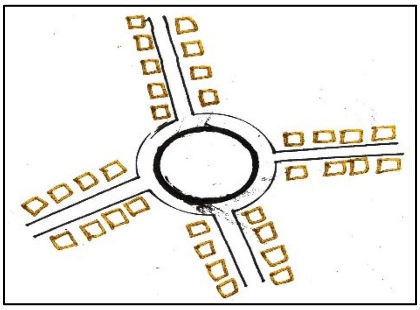

- इन अधिवासों का निर्माण जहाँ मुख्य केन्द्र से चारों ओर सड़कें जाती हैं, उन सड़कों के सहारे-सहारे गृहों का निर्माण हो जाता है।
- इसे तारा प्रतिरूप भी कहा जाता है।
- ऐसे प्रतिरूप उत्तरप्रदेश के बहाना और महौना गाँव में देखने को मिलते हैं।

9. टी आकार, वाई आकार प्रतिरूप

➢ ऐसे अधिवासों का निर्माण मुख्य सड़क में एक तरफ से गौण सड़क मिलने वाले क्षेत्रों में होता है।

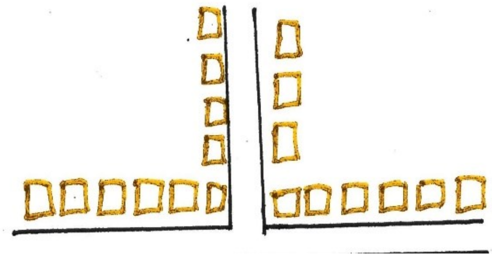

10. पंखा प्रतिरूप:

➢ ऐसे अधिवासों का निर्माण नदी के डेल्टा क्षेत्र में होता है।

➢ Ex- कृष्णा, कावेरी, गोदावरी के डेल्टा भागों में।

11. मधु छाता प्रतिरूप:

➢ ऐसे अधिवासों का निर्माण मधु छाता के समान होता है। इसमें एक घेरे में झोपड़ी बनी होती है, जिसका मध्य भाग खुला होता है।

➢ अफ्रीका में जूलू जाति के लोग ऐसे घरों का निर्माण करते हैं।

➢ भारत में नीलगिरी पहाड़ियों में टोडा जनजाति भी निर्माण करती है।

➢ फिंचव ट्रिवार्था ने इसे शू-स्ट्रिंग प्रतिरूप कहा।

12. अनियोजित या बेडौल प्रतिरूप (Amorphous Pattern)

➢ ऐसे अधिवास प्रतिरूपों का कोई निश्चित आकार नहीं होता है।

➢ इन प्रतिरूपों के रास्ते (मार्ग) अनियमित होते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2
CHAPTER

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

- ग्रामीण अधिवासों को उनकी स्थिति, आकार, आकारिकी समूहन के आधार पर विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है। ग्रामीण अधिवासों को मुख्य रूप से दो वर्गों में रखा जाता है -

1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास
2. एकत्रित या संघन अधिवास

1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास -

- यह ग्रामीण अधिवास का लघुत्तम रूप है।
- इस प्रकार में कहीं-कहीं एकाकी अधिवास ही देखने को मिलता है।
- इन्हे बिखरे हुए अधिवास के नाम से भी जाना जाता है।
- बड़े-बड़े खेतों में बनाये गये आवास प्रकीर्ण अधिवास के उत्कृष्ट उदाहरण होते है।

प्रकीर्ण अधिवासों के आधार -

- फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता ब्लांश के अनुसार प्रकीर्ण अधिवासों की प्रकृति अपकेन्द्री होती है। इस प्रक्रिया में ग्रामों का विकेन्द्रीकरण होता है।

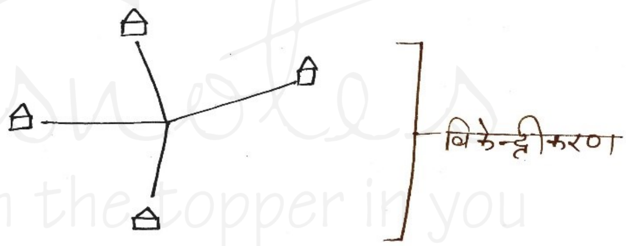

- प्रकीर्ण ग्रामीण अधिवासों के उद्भव को प्रभावित करने वाले कारक:
  1. प्राकृतिक कारक
  2. सांस्कृतिक कारक

1. **प्राकृतिक कारक** – प्रकीर्ण अधिवासों को देखने से स्पष्ट होता है कि ये ज्यादातर जटिल प्राकृतिक क्षेत्रों में देखे जाते हैं। जहाँ जलवायु, धरातल की बनावट, वन, जलाशय जैसे स्थानों पर क्योंकि ये मानव बसाव के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं।
2. **सांस्कृतिक कारक** - अधिवासों के आकार तथा स्वरूप के निर्धारण में अनेक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस प्रकार जहाँ ये कारक प्रतिकूल दशा में मिलते हैं, वहाँ प्रकीर्ण अधिवास पाए जाते हैं।

प्रकीर्ण अधिवासों के गुण एवं दोष -

- प्रकीर्ण या बिखरे हुए अधिवासों में रहने वाले लोगों को जहाँ एक ओर लाभ होते हैं, वहीं कुछ नुकसान भी होते हैं।

लाभ -

- कृषक परिवार अपने खेत में ही आवास बनाने के कारण कृषि कार्यों को अधिक समय दे सकते हैं। इससे फसलों की देख-रेख भी आसानी से और अच्छे तरीके से होती है।
- कृषक एकाकी आवास गृहों में रहकर संघन ग्रामों की पारंपरिक कृषि प्रणाली से अलग वैज्ञानिक और नवीन खेती करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
- प्रकीर्ण अधिवास गंदगी से दूर, स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

दोष -

- प्रकीर्ण अधिवासों में सामाजिक सौहार्द्ध, पारस्परिक सद्भावना, सहयोग और सामाजिक गुणों का विकास नहीं हो पाता।
- प्रकीर्ण अधिवास सुरक्षा के दृष्टिकोण से अच्छे नहीं होते हैं।
- प्रकीर्ण अधिवास आधुनिक समाज से दूर रहने के कारण पारंपरिक खेती पर अधिक जोर देते हैं।
- ये समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग रहते हैं।

2. एकत्रित या संघन अधिवास

- एकत्रित या संघन अधिवास समूह के रूप में पाए जाते हैं। ये बहुत सारे आवासों का समूह होते हैं।
- इनका क्षेत्रीय आकार प्रकीर्ण अधिवासों से बहुत बड़ा होता है।
- संघन अधिवास ग्रामों के रूप में पाए जाते हैं। इन्हें ग्राम या गाँव के नाम से जाना जाता है।
- इन आवासों में अलग-अलग प्रकार के व्यवसाय करने वाले लोग रहते हैं, लेकिन अधिकतर कृषक समाज से ही होते हैं।
- संघन अधिवासों का जीवन परस्पर सहयोग पर आधारित होता है।

एकत्रित या संघन अधिवासों के प्रकार -

A. संघन या पुंजित ग्राम

B. संयुक्त ग्राम

C. अपखण्डित ग्राम

A. संघन या पुंजित ग्राम -

- ये संघन बसे हुए ग्रामीण अधिवास होते हैं।
- इनके बीच में खाली भूमि होती है और बाहर खेत होते हैं।
- उत्तर भारत के मैदानों में ऐसे ग्रामों की प्रधानता है।

B. संयुक्त ग्राम -

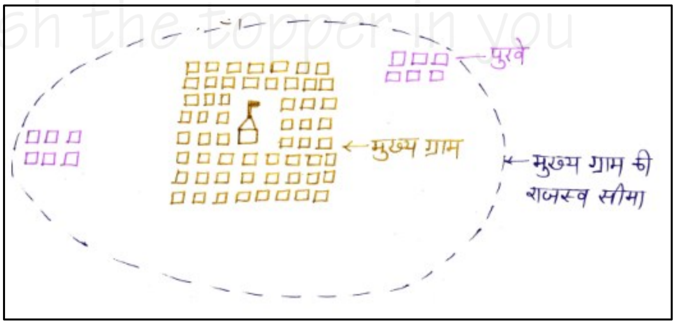

- जब कोई बड़े संघन ग्राम के बाहर, लेकिन राजस्व सीमा के भीतर ही, कुछ छोटे-छोटे पुरवे पाए जाते हैं, जिन्हें मुख्य ग्राम का ही अंग माना जाता है। ऐसे ग्रामों को संयुक्त ग्राम की संज्ञा दी जाती है।
- उदाहरण - गंगाघाटी में ऐसे अधिवास बड़ी संख्या में देखे जा सकते हैं।

C. अपखंडित ग्राम -

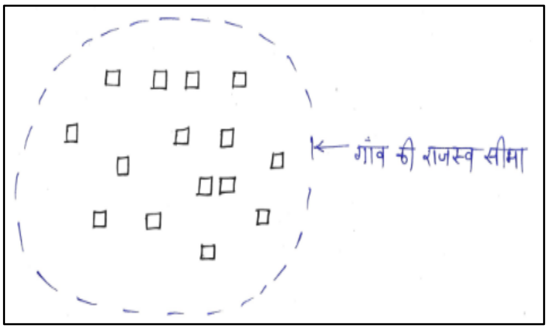

- जब एक राजस्व सीमा के भीतर ही आवास बिखरी अवस्था में पाए जाते हैं, तो उन्हें अपखण्डित ग्राम कहा जाता है।
- ऐसे ग्रामों को अर्द्ध संघन ग्राम भी कहा जाता है।
- ये प्रकीर्ण और संघन अधिवासों के बीच संक्रमण स्थिति को दर्शाते हैं।
- इनमें केंद्रीय स्थिति नहीं पाई जाती है।
- उदाहरण - ऐसे अधिवास कम उपजाऊ भूमि, बाढ़ क्षेत्रों, डेल्टाई क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं।

एकत्रित या संघन अधिवासों के आधार -

- एकत्रित या संघन अधिवासों के भी दो आधार प्रमुख रूप से होते हैं -
    1. प्राकृतिक आधार
    2. सांस्कृतिक आधार

1. **प्राकृतिक आधार** –

- प्राकृतिक कारक हमेशा से ही मानव अधिवासों को प्रभावित करते रहे हैं।
- प्राकृतिक कारकों में निम्न तत्वों को शामिल किया जाता है:
    - ✓ जलवायु
    - ✓ कृषि योग्य भूमि
    - ✓ उपजाऊ मृदा
    - ✓ उच्चावच
    - ✓ जलापूर्ति
- ये प्राकृतिक कारक जहाँ अनुकूल होंगे, वहाँ संघन अधिवास देखने को मिलेंगे।

2. **सांस्कृतिक आधार -**

- सांस्कृतिक कारक भी मानव अधिवासों को प्रभावित करते हैं।
- सांस्कृतिक कारकों में निम्न तत्वों को शामिल किया जाता है:
    - ✓ भाषा
    - ✓ राजनीतिक स्थिरता
    - ✓ परिवेश
    - ✓ धर्म

एकत्रित और संघन अधिवासों के गुण और दोष -

गुण -

- संघन अधिवासों में सामाजिक भावना अधिक पाई जाती है।
- संघन अधिवास सुरक्षा के दृष्टिकोण से उपयुक्त होते हैं।
- संघन अधिवासों में उच्च मानवीय मूल्य विकसित होते हैं।
- संघन अधिवास बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित होते हैं।
- संघन अधिवासों में मेलों, त्योहारों, और उत्सवों का आयोजन सम्भव हो पाता है।

दोष -

- संघन अधिवासों में लोग खेती और पशुपालन की अच्छी देखभाल नहीं कर सकते।
- यहाँ आपस में परिवारों के झगड़े भी देखे जा सकते हैं।
- कभी-कभी ये अधिवास हिंसात्मक हो जाते हैं।

<u>ग्रामों का विश्व वितरण</u>

- विश्व की लगभग आधी जनसंख्या (53%) गाँवों में निवास करती है, लेकिन इसका वितरण विश्व में समान नहीं है। ग्रामीण जनसंख्या को दो मोटे स्तरों पर विभाजित किया जा सकता है -

A. विकासशील देश जहाँ का मुख्य आधार कृषि कार्य है, वहाँ ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत अधिक देखा जाता है। जैसे:

- नेपाल (88%)
- भारत, म्यांमार (70%)
- थाईलैंड (80%)
- चीन (64%)
- श्रीलंका (77%)
- इंडोनेशिया (63%)
- तंजानिया (74%)

B. विकसित देशों में जहाँ का मुख्य आधार औद्योगिकीकरण और नगरीकरण है, वहाँ ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत कम देखा जाता है। जैसे:

- बेल्जियम (3%)
- आइसलैंड (8%)
- अर्जेंटीना (12%)
- यू.के. (12%)
- जर्मनी (13%)
- डेनमार्क (15%)
- ऑस्ट्रेलिया (15%)
- जापान (21%)
- रूस (23%)

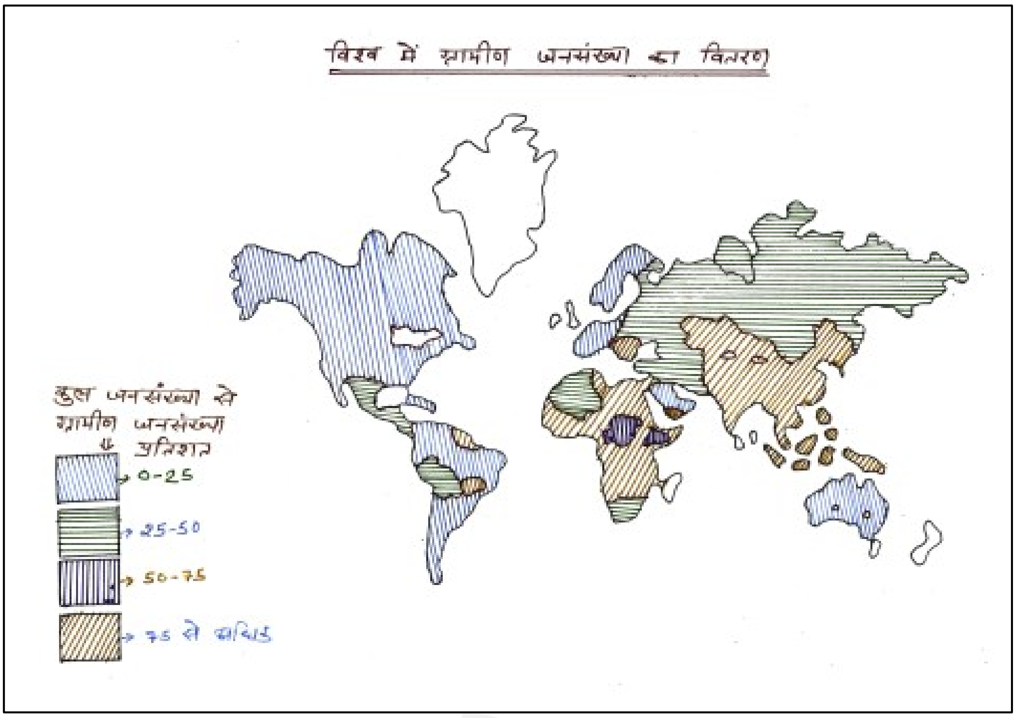

भारत में ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

- मानसूनी प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है और इसका मुख्य आर्थिक आधार कृषि कार्य ही है।
- भारत की भी अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है। भारत की लगभग 70% जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। जनगणना 2011 के आधार पर भारत की 84 करोड़ जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।
- गृहों और आवासों की संख्या, इनके घनत्व और समूहन के आधार पर भारत के ग्रामीण अधिवासों को 4 वर्गों में रखा जा सकता है।
- प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास
- अपखंडित अधिवास
- संयुक्त अधिवास
- संहत या सघन अधिवास

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास -

- ऐसे अधिवास लघु आकार और बिखरे हुए पाए जाते हैं।
- इन अधिवासों में घर, पशुशाला, गोदाम इत्यादि को शामिल किया जाता है।
- एकाकी अधिवास विषम स्थलाकृतियों वाले क्षेत्र में पाए जाते हैं।
- प्रकीर्ण अधिवासों के मुख्य क्षेत्र:
  - ✓ हिमालय के दक्षिणी ढालों पर - कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड में अधिक देखे जाते हैं।
  - ✓ पूर्वी पहाड़ियों और जंगली भागों में।
  - ✓ मालवा के पठार पर।
  - ✓ पश्चिमी घाट के ढालों पर - सतारा से लेकर केरल तक।
  - ✓ पश्चिमी शुष्क मरुस्थल में।
  - ✓ पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में।

2. अपखंडित अधिवास -

- ऐसे अधिवासों में घर कुछ दूरी पर बने होते हैं, लेकिन सब मिलकर एक अधिवास का रूप धारण करते हैं।
- इन अधिवासों में घर समूहों में होते हैं, लेकिन ये समूह दूर-दूर होते हैं और एक राजस्व क्षेत्र में होते हैं।
- NOTE: R.L. सिंह ने इन अधिवासों को 'पुरवा युक्त अधिवास' कहा है।
- इन अधिवासों में बसावट संघन नहीं होती है, लेकिन सम्पूर्ण ग्रामवासी पारस्परिक सहयोग की भावना से सामुदायिक जीवन बिताते हैं। खेती के कार्यों, सामाजिक उत्सवों, त्योहारों इत्यादि में वे सहयोग की भावना रखते हैं।

क्षेत्र -

- गंगा-घाघरा दोआब क्षेत्र में।
- ऊपरी गंगा-यमुना क्षेत्र में।
- तराई के दक्षिण में।
- गंगा के डेल्टाई भाग में (पश्चिम बंगाल)
- मध्यवर्ती भारत में (विंध्य क्षेत्र, सतपुड़ा क्षेत्र)

3. संयुक्त अधिवास -

- संयुक्त अधिवास में आवास संघन रूप में होते हैं। इनके बीच में जगह नहीं होती है।
- ये सम्पूर्ण संयुक्त आवास मिलकर एक बड़े ग्राम का निर्माण करते हैं।
- संयुक्त अधिवास में कुछ छोटे-छोटे पुरवे भी पाए जाते हैं, जो मुख्य गाँव के ही अंग होते हैं।
- NOTE: R.L. सिंह ने इन्हें 'अर्द्ध संघन अधिवास' बताया है।
- इनमें पाए जाने वाले पुरवे समान जाति के लोगों के होते हैं। इन पुरवों का नाम भी इन्हीं जातियों के आधार पर होता है।

क्षेत्र -

- गंगा घाटी के खादर और बांगर दोनों क्षेत्रों में।
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश - पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पुरवों की संख्या 4 से कम और पूर्वी उत्तर प्रदेश में पुरवों की संख्या 3-7 होती है।

4. संघन या संहत अधिवास -

- संघन अधिवास एकल रूप में होते हैं। इनमें आवास सटे हुए होते हैं।
- इन अधिवासों को गुच्छित या पुंजित, संकेंद्रित, न्यष्टित के नामों से भी जाना जाता है।
- संघन अधिवास पुरवा से लेकर बड़े ग्राम तक हो सकते हैं।
- संघन अधिवासों में विभिन्न जातियों, धर्मों, व्यवसायों के लोग एक साथ रहते हैं।
- इन ग्रामों में छोटी सेवा वाले लोग भी रहते हैं, जैसे - लौहार, धोबी, दर्जी, कुम्हार, नाई।
- संघन अधिवासों का निर्माण उपजाऊ समतल मैदानी भागों में हुआ है।

क्षेत्र -

- उत्तर भारत के विशाल मैदान।
- मध्य गंगा घाटी और निचली गंगा घाटी (केवल बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों को छोड़कर)।
- दक्षिण पठार के मैदानी भागों में।
- सागर तटीय भागों में (मुख्यतः पूर्वी तट पर)।

Toppersnotes Unleash the topper in you

3 CHAPTER नगरों की उत्पत्ति और विकास

- नगरों की उत्पत्ति का आशय ऐसी बस्ती से है, जिसमें नगरीय लक्षण विद्यमान हो।
- नगरों का विकास दो तरीकों से होता है:
  i. किसी ग्रामीण बस्ती या अधिवास के विकसित होने पर उसमें नगरीय लक्षण प्रकट होते हैं।
  ii. नगर के रूप में नवीन बस्ती का रूप ग्रहण करना।
- एक नगर का उद्भव छोटी-सी इकाई से शुरू होकर महानगर तक होता है। नगर के उद्भव से पहले प्राथमिक और द्वितीयक क्रियाएँ प्रभावी रहती हैं, लेकिन बाद में धीरे-धीरे विकास होता है, और तृतीयक और चतुर्थक क्रियाएँ प्रभावी हो जाती हैं, और नगर का विकास होने लगता है। नगर का चरम विकास होने के बाद उसका पतन भी होता है।

नगरों के विकास और उत्पत्ति को प्रभावित करने वाले कारक:

- नगरों की उत्पत्ति और विकास के संबंध में उसके स्थल और स्थिति का विशेष महत्व होता है।
- नगर जितना स्थान घेरता है, उसे नगर का स्थल कहते हैं।
- नगरों की उत्पत्ति और विकास को प्रभावित करने वाले कारक दो प्रकार के होते हैं:
  i. भौतिक कारक
  ii. मानवीय कारक

<u>भौतिक कारक</u>

Toppersnotes Unleash the topper in you

- नगरों के विकास में भौतिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
- भौतिक कारकों में स्थल और स्थिति, जलवायु, जलापूर्ति, अपवाह आदि शामिल किए जाते हैं।

1. स्थल और स्थिति

- नगरों के विकास के लिए स्थल और स्थिति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नगर के उद्भव के लिए उपयुक्त स्थल का होना आवश्यक होता है।
- स्थल के संदर्भ में उच्चावच, स्थलाकृति, संरचना, अपवाह, जलाशय आदि भौतिक तथ्यों को शामिल किया जाता है।
- विश्व के अधिकांश नगरों का विकास मैदानी भागों पर हुआ है, क्योंकि इनमें परिवहन सुविधाओं का अच्छा विकास होता है और जल भराव की समस्या नहीं रहती है।

2. जलवायु

- नगरों के विकास के लिए जलवायु की दशाएँ भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।
- शीतोष्ण जलवायु मानव बसाव के लिए सर्वाधिक अनुकूल होती है। इस कारण विश्व के बड़े नगरों का विकास इस जलवायु में हुआ है।
- अतिशीत, अतिऊष्ण, और अतिआर्द्र जलवायु मानव बसाव के लिए अनुकूल नहीं होती, जिससे इन क्षेत्रों में नगरों का विकास नहीं होता है।

3. जलापूर्ति

- नगरों के विकास के लिए जल स्रोत का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि नगर की गतिविधियों, उद्योगों और पेयजल के लिए जल की आवश्यकता होती है।

4. उच्चावच (Elevation)

- नगरों के विकास के लिए पहाड़ी और पठारी क्षेत्र प्रतिकूल होते हैं। इस कारण नगरों का विकास मैदानी और तटीय भागों में अधिक होता है।

5. जल निकास

- नगरों के विकास पर भूमि ढाल का भी प्रभाव देखा जाता है।
- भूमि का मंद ढाल जल निकास के लिए उपयुक्त माना जाता है।

<u>मानवीय कारक</u>

- नगरों की उत्पत्ति और विकास के लिए मानवीय कारक भी उत्तरदायी होते हैं, क्योंकि नगर सांस्कृतिक भू-दृश्य का प्रधान तत्व है। नगर मानव सभ्यता और संस्कृति के केंद्र होते हैं।
- नगरों के विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख मानवीय कारक

1. **क्षेत्र की आर्थिक संरचना:**
    - नगर मुख्यतः द्वितीयक और तृतीयक कार्यों के केंद्र होते हैं। वे अपने पास स्थित ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा करते हैं और बदले में इन क्षेत्रों से कच्चा माल और अन्य संसाधन प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, नगर अपने समीपवर्ती क्षेत्रों से घनिष्ठ आर्थिक संबंध रखते हैं। अगर नगर का पृष्ठ प्रदेश जितना समृद्ध और सुसंगत होता है, नगर का विकास उतना ही अधिक होता है।
2. **नगरों के आर्थिक आधार:**
    - नगरों का विकास अपने समीपवर्ती क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है। नगर से उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति बाह्य क्षेत्रों के लिए की जाती है। नगर का विकास इन आर्थिक क्रियाओं पर आधारित होता है। इस कारण इन क्रियाओं को नगर का आर्थिक आधार या कार्यात्मक आधार कहा जाता है।
    - संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि नगर के आधारभूत कार्यों की अधिकता या प्रबलता जितनी अधिक सुदृढ़ होगी, नगर का विकास भी उतना ही अधिक होगा।
    - व्यापार, वाणिज्य, विनिर्माण, यातायात के साथ ही विभिन्न सेवाएँ जैसे: शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, मनोरंजन, धार्मिक और सांस्कृतिक कार्य भी नगर के आधारभूत कार्य होते हैं।

    आर्थिक कार्यों का महत्व कम हो जाने पर नगरीय विकास अवरुद्ध हो जाता है और नगर का पतन हो जाता है।
3. **प्रशासकीय एवं राजनीतिक आवश्यकताएँ:**
    - अगर नगरों को प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक देखा जाए तो अधिकांश नगरों का विकास राजधानी नगर के रूप में हुआ है। प्रशासनिक नियंत्रण तथा सुरक्षा के उद्देश्य से प्रत्येक राजनीतिक प्रदेश में ऐसे केंद्रों की आवश्यकता होती है, जहाँ से पूरे देश का प्रशासनिक संचालन सफलतापूर्वक किया जा सके।
    - आज वर्तमान समय में विश्व के महत्वपूर्ण नगर राजधानी नगर के रूप में विकसित हो चुके हैं।
4. **प्रौद्योगिक विकास:**
    - नगरों के विकास में वैज्ञानिक तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
    - प्राचीनकाल में नगरों में पिछड़ेपन का प्रमुख कारण तकनीकी का अभाव होना था। लेकिन आज तकनीकी के कारण विश्व में बड़े-बड़े नगरों का विकास हुआ है।
    - तकनीकी विकास के कारण ही नगरों में बड़े-बड़े उद्योगों का विकास, तीव्रगामी परिवहन व्यवस्था जैसी सुविधाएँ संभव हो पाई हैं।

Unleash the topper in you

5. **सामाजिक और जनांकिकीय कारक:**
   - नगरों के विकास पर विविध सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विभिन्न मानव समाजों की मान्यताओं, परंपराओं, रीति-रिवाजों आदि का प्रभाव नगरों के विकास पर देखा गया है।
   - विश्व में अधिकांश नगरों का विकास धार्मिक केंद्र, शैक्षिक केंद्र, स्वास्थ्य और मनोरंजन केंद्र, और पर्यटन केंद्र के रूप में हुआ है।

नगरीय विकास की अवस्थाएँ

- नगरों का विकास एक चक्रीय प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत नगर विकास से लेकर कई अवस्थाओं से गुजरते हुए अंतिम स्थिति को प्राप्त करते हैं। नगरों के विकास की अवस्थाओं को एक-दूसरे से पृथक करना अत्यंत कठिन है।
- नगरों के विकास की अवस्थाओं का अध्ययन निम्नलिखित विद्वानों द्वारा किया गया है:

1. पैट्रिक गेडिस
2. लेविस ममफोर्ड
3. ग्रिफिथ टेलर

1. पैट्रिक गेडिस

- पैट्रिक गेडिस (1931) ने नगरीय विकास के युगों को तीन वर्गों में विभक्त किया, जो निम्नलिखित हैं:
  - ✓ **उप-तकनीक (Pre-Technic)**: लगभग 1000 से 1800 ई. तक का समय
  - ✓ **पुरातन तकनीक (Proto-Technic)**: 1800 से 1900 ई. तक का समय
  - ✓ **नूतन तकनीक (Modern-Technic)**: 1900 ई. से वर्तमान समय तक नगरीय विकास को दर्शाता है

2. लेविस ममफोर्ड

- इन्होंने 1938 में अपनी पुस्तक "The Culture of Cities" में नगरीय विकास की 6 अवस्थाएँ बताई, जो निम्नलिखित हैं:
  1. **इऑपोलिस या पूर्वनगर (Eopolice or Pre-City)**:
     - ✓ ये नगर मानव सभ्यता के विकास के प्रथम चरण के प्रतीक हैं।
     - ✓ इनमें कृषि और पशुपालन जैसी प्राथमिक क्रियाएँ शामिल होती हैं।
  2. **पोलिस (Polis) / नगर**:
     - ✓ इस अवस्था में छोटे गाँवों का रूपांतरण लघु नगर या कस्बे के रूप में हो जाता है।
     - ✓ इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना लघु व्यवसाय शुरू करता है।
  3. **मेट्रोपोलिस (महानगर)**:
     - ✓ इस अवस्था में कुछ नगर विशाल हो जाते हैं। ये नगर अपने समीपवर्ती नगरों या गाँवों की सेवा करने लग जाते हैं और उनकी ओर फैलने भी लग जाते हैं।
     - ✓ ऐसे नगरों के दूरवर्ती क्षेत्रों से सामाजिक और आर्थिक संबंध स्थापित हो जाते हैं।
     - ✓ इन नगरों में विनिर्माण उद्योगों का विकास हो जाता है।
     - ✓ यातायात और संचार की सुविधाओं का विकास होने से नगर में जनसंख्या घनत्व बढ़ने लगता है।
     - ✓ बड़े-बड़े उद्योगों का विकास हो जाता है।
  4. **मेगालोपोलिस**:
     - ✓ यह नगर विकास की चरम अवस्था होती है।
     - ✓ इसमें आवासों, उद्योगों, और जनसंख्या घनत्व का उच्चतम स्तर पाया जाता है।
     - ✓ नगर में व्यापार, कला, साहित्य, और अन्य क्रियाओं में धनी वर्ग का आधिपत्य होने लगता है।

Toppernotes
Unleash the topper in you

5. **टायरेनोपोलिस (Declining City)**:
    - ✓ इस अवस्था में नगर में आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं।
    - ✓ नगर की प्रशासनिक व्यवस्था बिगड़ने लगती है और लोग नगर को छोड़ने लगते हैं।
6. **नेकोपोलिस (Destruction of the City)**:
    - ✓ यह नगरीय ह्रास की अंतिम अवस्था है।
    - ✓ इसमें नगर नष्टप्राय हो जाता है, जनसंख्या बहुत कम हो जाती है, और चारों ओर खंडहर ही खंडहर दिखाई देते हैं।

3. ग्रिफिथ टेलर

- ➢ टेलर ने 1953 में नगर की 7 अवस्थाओं का वर्णन किया:

1. **पूर्व शैशवावस्था (Pre-Infancy Stage)**:
    - ✓ यह नगर विकास की पहली अवस्था होती है।
    - ✓ इसमें सड़क के किनारे कुछ मकान और दुकानें बनने लगती हैं।
2. **शैशवावस्था (Infancy Stage)**:
    - ✓ इस अवस्था में घरों और दुकानों की संख्या बढ़ने लगती है और सड़कों का जाल बनने लगता है।
3. **बाल्यावस्था (Childhood Stage)**:
    - ✓ इस अवस्था में नगर के मध्य व्यापार क्षेत्र का विकास हो जाता है।
    - ✓ जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ने लगती है, और मकानों की संख्या भी बढ़ने लगती है।
4. **किशोरावस्था (Adolescence Stage)**:
    - ✓ नगर का विकास बाहर की ओर होने लगता है।
5. **प्रौढ़ावस्था (Maturity Stage)**:
    - ✓ इस अवस्था में नगर में कई औद्योगिक और आवासीय इकाइयाँ बन जाती हैं, और दोनों अलग-अलग दिखाई देने लगती हैं।
    - ✓ मानव आवास अलग-अलग वर्गों (उच्च, मध्य, निम्न) में विभाजित हो जाते हैं।
6. **उत्तर प्रौढ़ावस्था (Post-Maturity Stage)**:
    - ✓ नगर विकास की चरम अवस्था है। इसमें नगर सर्वोच्च स्थिति पर होता है।
    - ✓ सड़कों का विकास नगर नियोजन के आधार पर होता है। टेलर के अनुसार इस अवस्था में नगरों की जनसंख्या 40 हजार से अधिक होती है।
7. **वृद्धावस्था (Senescence Stage)**:
    - ✓ यह नगर के पतन की अवस्था है। इस अवस्था में नगर का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

<u>जनसंख्या और विस्तार के आधार पर वर्गीकरण</u>

- ➢ जनसंख्या और वितरण के आधार पर नगरों को 7 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

1. **नगरीय पुरवा**
    - ✓ यह नगरीय बस्ती का सबसे छोटा रूप है।
    - ✓ इन बस्तियों की संख्या 100-200 तक होती है।
2. **नगरीय गाँव**
    - ✓ इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग टेलर ने किया।
    - ✓ इन बस्तियों को गुगर या अर्द्धनगर भी कहा जाता है।
    - ✓ इन नगरीय गाँवों में बस्तियों की संख्या 200-500 तक होती है।

3. **कस्बा**

- ✓ कस्बा नगरीय गाँवों से बड़ा होता है। इसका आकार नगरीय गाँव से 2 गुना होता है।
- ✓ इनमें बस्तियों की संख्या 500 से ज्यादा होती है।
- ✓ भारत में 5000 से 50000 आबादी वाली बस्तियों को कस्बा कहा जाता है।

4. **नगर**

- ✓ कस्बों से बड़ी बस्तियों को नगर कहा जाता है।
- ✓ इसमें आधुनिक सुविधाएँ मिलनी शुरू हो जाती हैं।
- ✓ नगर में जनसंख्या 50,000 से 100,000 तक होती है।

5. **महानगर**

- ✓ 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को महानगर कहा जाता है।
- ✓ इस कारण इन्हें "मिलियन सिटी" या "दसलाखी नगर" भी कहा जाता है।

6. **सन्नगर**

- ✓ इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग पैट्रिक गेडिस ने 1915 में किया।
- ✓ महानगरों का अधिक विस्तार होने के कारण ये आपस में मिल जाते हैं, जिससे इनकी जनसंख्या बहुत अधिक हो जाती है।

7. **मेगालोपोलिस**

- ✓ इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1957 में G. गॉटमैन ने किया।
- ✓ विशाल महानगरीय क्षेत्र को मेगालोपोलिस कहा जाता है।

भारत में जनसंख्या के आधार पर नगरों के वर्ग

भारत में जनगणना विभाग द्वारा जनसंख्या के आधार पर नगरों के 6 वर्ग बताए गए हैं:

वर्ग	जनसंख्या
1	1 लाख से अधिक
2	50,000 से अधिक
3	25,000 से अधिक
4	10,000 से अधिक
5	5,000 से अधिक
6	5,000 से कम

स्थानीय प्रशासन के आधार पर वर्गीकरण -	
1	नगर निगम
2	नगर परिषद्
3	नगरपालिका
4	छावनी नगर
5	जनगणना नगर

विश्व में नगरों का विकास

- ➢ मानव इतिहास के विभिन्न कालों में नगरों का विकास मानव सभ्यता और संस्कृति के रूप में हुआ।
- ➢ नगरों के उद्भव और विकास के सम्पूर्ण इतिहास को निम्नलिखित 3 युगों में विभाजित किया जा सकता है:

Toppersnotes Unleash the topper in you

1. **प्राचीनकाल (450 ई. से पूर्व)**
2. **मध्यकाल (450 ई. से 1800 ई. तक)**
3. **आधुनिक काल (1800 ई. से वर्तमान तक)**

प्राचीन काल के नगर

- 450 ई. से पूर्व के काल को प्राचीनकाल माना जाता है।
- मानव इतिहास में सबसे पहले नगरों का विकास 6000 ई. पूर्व से 5000 ई. पूर्व के मध्य उत्तर पाषाणकाल में हुआ, लेकिन उनका आकार बहुत छोटा था।
- प्राचीनकाल में निम्न मानव सभ्यता के केंद्रों पर नगरों का विकास हुआ:
  - ✓ मेसोपोटामिया - दक्षिण पश्चिम एशिया
  - ✓ नील नदी घाटी - मिस्र
  - ✓ सिन्धु घाटी - भारत और पाकिस्तान
  - ✓ हांग्हो घाटी - चीन

NOTE:

प्राचीनकाल के नगरों के बारे में कुछ इतिहासकार मानते हैं कि प्रारंभिक नगरीय सभ्यता की उत्पत्ति दक्षिण पश्चिम एशिया में दजला-फरात नदियों के मध्य स्थित जलोढ़ मिट्टी के समतल मैदानों में हुई। फिर यहाँ से इनका विस्तार बाकी विश्व में हुआ।

1. मेसोपोटामिया के नगर

- मानव सभ्यता के विकास में सबसे पहले नगरों का विकास दक्षिण-पश्चिम एशिया में स्थित दजला-फरात नदियों के मध्य हुआ।
- नगरों के विकास का प्रमुख कारण उपजाऊ मृदा थी।
- ये नगर बड़े या विकसित गाँवों के रूप में थे।
- इन नगरों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था।
- प्रमुख नगर:
  - ✓ बेबीलोन
  - ✓ उर
  - ✓ इरेच
  - ✓ इरीदू
  - ✓ लागांश
  - ✓ लार्सा
  - ✓ किश
  - ✓ जमदेतनासर

- बेबीलोन: इस समय विश्व का विशालतम नगर था।
  राजधानी: अक्काद

2. नील नदी घाटी के प्राचीन नगर

- नील नदी घाटी सभ्यता के नगरों का विकास मेसोपोटामिया के समकालीन हुआ।
- नील नदी घाटी के नगर मेसोपोटामिया के नगरों से छोटे थे।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- **प्रमुख नगर:**
  - ✓ थिनिस
  - ✓ हेलियोपोलिस
  - ✓ एलकाव
  - ✓ मेम्फिस
  - ✓ नेखेब
  - ✓ टैनिस
  - ✓ अखेताटेन
- प्रमुख नगर - एबीडोस ← विश्व का प्राचीनतम नगर

3. सिन्धु घाटी के नगर

- प्राचीनकाल में सिन्धु घाटी में विकसित मानव सभ्यता मेसोपोटामिया और नील नदी घाटी की विकसित सभ्यताओं के समकालीन थी।
- सिन्धु घाटी के दो प्रसिद्ध नगर मोहनजोदड़ो और हड़प्पा थे। दोनों नगरों को नियोजित ढंग से बसाया गया था। इनकी सड़के समकोण पर काटती थीं।
- इन नगरों के मकानों में कुआँ, स्नानागार, शयनकक्ष, अन्नागार, जल निकास, रसोई व्यवस्था थी।
- ये नगर 7 बार बस कर नष्ट हो चुके थे।
- हड़प्पा: मोहनजोदड़ों से लगभग 560 किमी उत्तर में स्थित था। यह नगर वर्तमान में पाकिस्तान के मांटगोमरी जनपद में स्थित है, जो लाहौर से दक्षिण-पश्चिम की ओर 160 किमी दूर है।
- सिन्धु घाटी के अन्य नगर:
  - ✓ लोथल
  - ✓ रूप
  - ✓ कोटला
  - ✓ निहाग
  - ✓ वाणवली

4. भारत के प्राचीन नगर

- सिन्धु घाटी सभ्यता के विनाश के बाद आर्य सभ्यता का विकास भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ।
- बौद्ध कालीन भारत 16 जनपदों में विभक्त था, जिनकी राजधानियों के रूप में अनेक नगरों का विकास हुआ:
- इन्द्रप्रस्थ, तक्षशिला, मधुरा, साकेत, कौशाम्बी, वैशाली, कुसावती, विराटनगर, राजगृह, प्रावात्ती, चम्पा, काशी, काम्पिल्य आदि।
- मौर्य शासक काल में पाटलिपुत्र नगर का विकास मगध साम्राज्य की राजधानी के रूप में हुआ। इसके अलावा दक्षिण भारत में कन्नोज, काँची, अयोध्या, काशी, श्रीनगर, उज्जैन, थानेश्वर नगरों का भी विकास हुआ।

5. चीन के प्राचीन नगर

- चीन के हांग्हो घाटी में नगरों का विकास हुआ, जिसका केंद्र हांग्हो की सहायक नदी हो जाता था।
- हांग्हो नदी तट पर स्थित शांग या थिन चीन के सबसे प्राचीन नगर थे।
- यांग्टिसीक्यांग नदी के मैदानी भाग में लोयांग, अन्यांग, चांगान नगरों का विकास हुआ।
- अन्य नगर:
  - ✓ लियांगचाऊ
  - ✓ खोतान
  - ✓ सुचाऊ
  - ✓ आन्हसी
  - ✓ कैन्टन
  - ✓ चेगदू

6. प्राचीन यूनानी नगर

- एथेन्स: यूनान का सबसे प्राचीन नगर है।
- स्पार्टा, मेगारा, वेई, पीसा, सियना, कोरिन्थ अन्य नगर थे।

7. **प्राचीन रोम नगर**

- यूनानी साम्राज्य के पतन के बाद छठी शताब्दी ईसा पूर्व में रोमन साम्राज्य की स्थापना हुई।
- रोमनकाल के नगर सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ बनाए गए थे। इसके अलावा राजधानी नगर, व्यापारिक नगरों का भी विकास हुआ।
- **प्राचीन नगर**:
  - ✓ रोम, लियोन्स, ट्यूरिन, ओस्टिया, बलग्रेड, कोलोन, यार्क, डेलोस, मायोस, हरमोस इत्यादि थे।
  - ✓ रोम: इटली में टाइबर नदी के तट पर 100 ई. पूर्व के लगभग ही विश्व का सबसे बड़ा नगर बन गया।
    राजधानी: कुस्तुनतुनिया

मध्यकालीन नगर

- 450 ई. से लेकर 1800 ई. तक के काल को मध्यकाल में शामिल किया जाता है।
- इस काल को तीन ऐतिहासिक कालों में विभाजित किया गया है:

1. **अंध युग (450 ई. - 1000 ई. तक)**
2. **मध्य युग (1000 ई. - 1500 ई. तक)**
3. **पुनर्जागरण युग (1500 ई. - 1800 ई. तक)**

यूरोप

अंध युग

- नगरों का विकास अवरुद्ध रहा।

मध्य युग

- नगरों का विकास तीव्र गति से हुआ।
- इस समय धार्मिक और किला आधारित नगरों का विकास हुआ।
- पेरिस, वेनिस, मिलान, फ्लोरेंस (इटली), गेंदू (बेल्जियम), कोलोन, लूवेक (जर्मनी) आदि नगरों का विकास हुआ।

पुनर्जागरण युग

- इस काल में नगरों का विकास (बारोक योजना) तारा आकृति के आधार पर हुआ।
- ओस्लो, लंदन, पेरिस, नेपुल्स, हैम्बर्ग, एम्सटर्डम आदि नगरों का विकास हुआ।

एशिया

अंध युग

मध्य युग

- इस काल में एशियाई नगरों का विकास धीरे-धीरे हुआ।
- शंघाई, होगचाऊ, नानकिंग, टोक्यो, क्यूटो, हिरोशिमा, **सकाई, नारा** इत्यादि नगरों का विकास हुआ।

पुनर्जागरण युग

- इस काल में भी नगरों का विकास हुआ।
- शंघाई, सिंगापुर, रंगून, कोलकत्ता, बम्बई, मद्रास इत्यादि कई किलों व धार्मिक नगरों का विकास हुआ।

उत्तरी अमेरिका

- न्यूयॉर्क, **बोस्टन**, **बाल्टीमोर**, **मॉन्ट्रियल**, **क्यूबेक**, **टोरंटो** इत्यादि नगरों का विकास हुआ।

दक्षिण अमेरिका

- **रियो डी जनेरो, सेंटियागो**, **लीमा**, **ब्यूनस आयर्स** इत्यादि नगरों का विकास हुआ।

Unleash the topper in you